सुख का साधन

इस लोक परलोक में सकल सुखों की प्राप्ति ज्ञान से होती है। जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर बारह सालों से नैतिक धार्मिक व तात्त्विक ज्ञान की उत्तम पुस्तकों को देश-देशान्तर में अल्प मूल्य पर अनेक दातारों की द्रव्य सहायता से प्रचार कर रहा है।

ज्ञान प्रचार करना हरेक मनुष्य के लिए, अपने हित के लिए परम आवश्यक है। हम लोगों ने वस्त्र, अन्न, पानी, मकान आदि के दान किये हैं जिनसे यह सब बाह्य चीजें मिलीं हैं परन्तु ज्ञान दान थोड़ा किया है जिससे ज्ञान भी थोड़ा प्रगट हुआ है

अब बहुत ज्ञान प्राप्त करना ही सुख साधन है। ज्ञान प्रचार के काम से निर्मल कीर्ति और बहुत पुण्य प्राप्त होता है। यह जानकर दूसरे सब फिजूल खर्च बंद कर प्राप्त धन का सदुपयोग अर्थात् उत्तमोत्तम पुस्तकों के प्रकाशित करने कराने में सहायता [illegible] या थोक पुस्तकें मँगाकर प्रभावना करें।

सुनहरी नामावली

मूल संस्थापक

श्री गिरधारीलाल [illegible] जी

[illegible] बैंगलोर

संस्थापक

श्री फूलचन्द जी [illegible]

श्री संघ बम्बई

मुख्य सहायक

श्री विजयराज जी मूथा मद्रास

श्री सिरहमलजी [illegible]

श्री विजयराजजी चौधरी ब्यावर

छपा के तैयार रखी हुई पुस्[illegible] द्रव्य सहायता देकर प्रकाशित करावें १—जैन धर्म अन्य धर्मों से क्यों श्रे[illegible] है २—जैन दर्शन में स्याद्वाद ३—जै[illegible] दर्शन में [illegible] मीमांसा ४—[illegible] दर्शन में साम्यवाद ५—आत्म [illegible] ६—आत्मा और कर्म का सं[illegible] ७—आस्तिकवाद सिद्धि ८—सामाय[illegible] रहस्य ९—हम जैनी कैसे बने १०—[illegible] की विशेषताएं ११—आत्म वीर [illegible] कथाएँ १२—जैन और जगत् १३—स्याद्वाद और जैन दर्श[illegible] १४—पवित्र जीवन का परि[illegible] १५—भावना शतक इत्यादि।

जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय मु० ब्यावर (राजपूताना)

श्री आत्म-जागृति कार्यालय बगडी (मारवाड)

निवेदन

जिस देश में उत्तम साहित्य का प्रचार होता है वह देश सब प्रकार के दुःखों से छूटकर सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है। भारत देश वह था जहाँ बाल (बालक) और गोपाल (वृद्धादि) सब अच्छे साहित्य के रसिक थे। आज उसी भारत में सौ में १० पुरुष और ३ बहनें भी अक्षर ज्ञान तक ठीक ठीक नहीं रखता। उत्तम साहित्य की बात तो एक ओर रही, जो लोग साधारण रूप से पढ़ लिख सकते हैं वे भी प्राय अपनी शिक्षा का सदुपयोग करते नहीं दिखाई देते। आज कल विकारी उपन्यास आदि वैसा साहित्य की वृद्धि हो रही है। और कई लोगों की पठन शक्ति उसमें व्यय हो जाती है। भोजन शरीर का पोषक है परन्तु कुपथ्य भोजन करने से रोग बढ़ते हैं वैसे ही गन्दे उपन्यास आदि विकारी साहित्य के पढ़ने से लाभ के बदले हानि हो जाती है।

अब यह प्रश्न उठता है कि जब साहित्य के पाठक ही थोड़े हैं तो फिर उत्तम साहित्य प्रचार की आवश्यकता ही क्या? बात यह है कि जहाँ पढ़ने वाले कम हैं वहाँ यदि उत्तम साहित्य का प्रचार किया जाय तो पाठकों की बुद्धि का विकास होता है और वे पाठक संस्कारित होकर शिक्षा प्रचार और जीवन सुधार कर सेवा कार्य करने में लग जावेंगे।

आज लाखों पढ़े लिखे आदमी जो दिखाई देते हैं उनमें भी देश, जाति और धर्म की सेवा करने की उच्च भावना वाले स्वयं सेवक कितने हैं? उत्तर स्पष्ट है। ऐसे लोगों संख्या बहुत कम है। इसी त्रुटि की पूर्ति के लिए स्थान स्थान में उत्तम साहित्य का प्रचार करने के लिए श्री आत्म जागृति कार्यालय की स्थापना की गई है।

आरोग्य शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें—आरोग्य विज्ञान के ज्ञान के बिना आज हम लोग रोगी और दुखी हो रहे हैं। आहार विहार रहन सहन आदि हरेक काम में अज्ञान वश ऐसी गलतियां होती हैं जो निरोगता का घातक है। इस सम्बन्ध में सुलभ साहित्य प्रकाशित करके जनता की सेवा करना कार्यालय का एक काम होगा।

बालोपयोगी पुस्तकें—बालक ही समाज के स्तम्भ हैं। बाल्य वय ही जीवन सुधार के संस्कार डालने का श्रेष्ठ समय है। यदि इस अवस्था में अच्छे संस्कार पड़ जायँ तो उन्नति और सुधार में कोई विलम्ब नहीं। इस कार्यालय की ओर से बालकोपयोगी गद्य पद्य गीत कथा आदि की सुन्दर मनोरंजक पुस्तकें प्रकाशित की जावेगी।

स्त्री शिक्षा की पुस्तकें—स्त्री शिक्षा के बिना समाज की उन्नति असम्भव है। भारतवर्ष में जब तक स्त्री समाज अशिक्षित और अन्ध श्रद्धालु रहे तब तक सुधार के सभी उपाय प्रायः निष्फल ही समझिए। कार्यालय की ओर से इस ओर साहित्य प्रकाशन आदि उपायों द्वारा प्रयत्न किया जावेगा।

समाज सुधार सम्बन्धी पुस्तकें—जो विकार आदि सामाजिक रीति रिवाजों में घुस गए हैं उन्हें दूर किए बिना भी सुधार नहीं हो सकता। ऐसा साहित्य भी यहाँ से प्रकाशित किया जावेगा जो इन विकारों को दूर करने में सहायक हो।

नीति की पुस्तकें—नीति ही धर्म की नींव है। आज नैतिक जीवन प्रायः मलीन हो रहा है। इसीसे हर प्रकार के शारीरिक मानसिक व्यापारिक सामाजिक व धार्मिक दुःख बढ़ रहे हैं। जब नैतिक जीवन सुधर जावेगा तब सब दुःख दूर हो जायँगे। इसलिए नैतिक पुस्तकें प्रकाशित होना भी बहुत आवश्यक है। यह कार्यालय ऐसा साहित्य भी प्रकाशित करेगा।

तत्वज्ञान—तत्वज्ञान से सब धर्म कलह, धर्मोन्माद और दुराग्रह से

छुटकारा मिलकर आत्मा में सात्विक भावना पैदा होकर जीवन उन्नत बनता है। इसलिए तत्त्वज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित की जावेंगी।

आरोग्यशिक्षा, बालशिक्षा, स्त्री शिक्षा, समाज-सुधार व तत्त्वज्ञान सम्बन्धी उत्तम पुस्तकें त्यागी व गृहस्थ उत्तम लेखकों से लिखवाकर अल्प मूल्य व अमूल्य खूब प्रचार करना इस कार्यालय के मुख्य ध्येयों में से एक है। इसकी सफलता माननीय त्यागी महात्माओं और सद्गृहस्थ विद्वानों की कृपा सहायक प्रचारकों की उदारता, स्वयंसेवकों और पाठकों की सहानुभूति पर निर्भर है।

सब के सहकार की आवश्यकता है और ऐसी पवित्र भिक्षा ही के लिए स्वपर-कल्याण, सुख और साधक पात्र आपके सन्मुख रखा जाता है, यथाशक्ति बुद्धि, शक्ति, सेवा व धन के बीज बोकर अक्षय लाभ प्राप्त करें। हम यह भी प्रयत्न करते हैं कि हरेक स्थान में इसी प्रकार संस्थायें स्थापित की जाकर उत्तम साहित्य का प्रचार किया जाय।

इस कार्यालय की ओर से जो पुस्तकें प्रकाशित होंगी सुन्दर और लाभदायक अवश्य होंगी, परन्तु उनका मूल्य सदा कम रखा जावेगा ताकि वे सर्व साधारण को सुलभ हो सकें। विचार तो यह है कि उनका मूल्य अधिकतर दो पैसे, आना दो आना ही रखा जावे। प्रायः चार आने के अंदर अंदर की कीमत की पुस्तकें तैयार की जायगी 'सारांश यही' एक फर्मे का मूल्य दो पैसा।

निवेदक—

सौभागमल अमोलकचंद लोढा } मंत्री
तथा मगनमल कांठेड़ा

श्री 'आत्म जागृति' कार्यालय,
पगडी (मारवाड़) वाया सोजत रोड

आत्म-जागृति ग्रन्थ माला के

ग्राहक बनने के नियम

इस माला के ग्राहक दो प्रकार के हैं

(१) सेवाभावी ग्राहक और (२) स्वत्वधारी ग्राहक

( ) सेवाभावी ग्राहक के चार प्रकार हैं।

(१) अध्ययन प्रेमी ग्राहक—जो हमेशा कम से कम एक घंटा उत्तम साहित्य स्वयं पढ़ें और यथाशक्ति औरों को पढ़कर सुनावें।

(२) विद्यार्थी ग्राहक—जो विद्यार्थी हो और एक सप्ताह में कम से कम दो घंटा उत्तम साहित्य स्वयं पढ़ें और यथाशक्ति औरों को पढ़ कर सुनावें।

(३) प्रचारक ग्राहक—जो इस संस्था की पुस्तकों के मिलने के बाद पन्द्रह दिन में सम्पूर्ण पुस्तक पढ़कर दूसरे ऐसे सज्जन को देवें कि जो पन्द्रह दिन में उसे पढ़कर ऐसे ही नियम के पालक अन्य किसी को उत्तरोत्तर देवें। यदि कोई ऐसा लेने वाला न मिले तो किसी सार्वजनिक संस्था में भेंट देवे। यदि संस्था न हो तो सार्वजनिक पुस्तकालय खोलकर इन पुस्तकों को धर दें और उसमें अन्य उत्तम साहित्य का भी संग्रह करें।

(४) सार्वजनिक ग्राहक—कोई भी पुस्तकालय, पाठशाला, कन्याशाला, समाचारपत्र, प्रधान गृहस्थ व त्यागीवर्ग।

सेवाभावी चारों प्रकार के ग्राहकों को इच्छानुसार मूल्य पर या अमूल्य सब पुस्तकें भेजी जावेंगी।

अर्थदाता ग्राहक—जो इच्छानुसार सहायता हर साल भेजते रहेंगे वे अर्थदाता ग्राहक गिने जायेंगे।

नोट—सेवाभावी ग्राहकों को हर तीन महीने के अन्त में आप जिस श्रेणी के ग्राहक हैं उसके नियम का ठीक पालन हो रहा है, ऐसा विवरण पत्र कार्यालय को अवश्य देना चाहिए। यदि छ मास तक कोई कर्तव्य विवरण पत्र नहीं आवेगा तो आपका उस श्रेणी से नाम अलग किया जावेगा। यदि यह संस्था उत्तम सेवा करती हुई अनुभव सिद्ध होवे तो गुण परीक्षक सज्जन इसकी खूब उन्नति करें व हर स्थान में ऐसी संस्थाएँ स्थापित करें, यही नम्र प्रार्थना है।

विनीत—

सौभागमल अमरचन्द लोढ़ा,
तथा मगनमल कोचेटा, } मंत्री

श्री 'आत्म जागृति' कार्यालय,
बगड़ी (मारवाड़) वाया सोजत रोड़

प्रकाशित पुस्तकें

आत्म जागृति कार्यालय से प्रकाशित पुस्तकें

(१) आत्म जागृति भावना—इसमें भावना से चरित्र बल प्रकट करके आत्मा की शक्ति का विकास हर हालत में करते रहने का मार्ग सिखाया गया है। बालक, विद्यार्थी, युवक, युवति, गृहस्थ, वृद्ध, विधुर, विधवा, साधु आदि सब के लिये उनकी अवस्था के अनुकूल अलग अलग लगभग २४ भावनायें हैं। परम हितकारी हैं, सब जाति, धर्म व अवस्था के मनुष्य के हमेशा नित्य नियम में पढ़ने योग्य हैं। लगभग एक सौ पृष्ठ की पुस्तक का नाम मात्र मूल्य दो आना।

(२) समकित स्वरूप भावना—इह-परलोक कल्याण की इच्छा वाले आत्माओं को नित्य नियम में रखने योग्य है। आत्म जागृति भावना में से चुना हुआ विभाग है। लगभग ४० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य एक आना।

(३) विद्यार्थी व युवक की भावना—विद्यार्थी व युवकों को परम कल्याणकारी है, दिव्य महापुरुष बनने का सरल उपाय है। हरएक व्यक्ति को अवश्य पास रखना चाहिए। पृष्ठ चालीस के लगभग, कीमत केवल एक आना।

(४) समकित (आत्मबोध) प्रश्नोत्तर अथवा मोक्ष की कुंजी भाग १-२—अनेक शास्त्र व ग्रंथों में से समकित के विषय का संग्रह करके इसमें परम दुर्लभ समकित गुण को प्रकट करने का सरल मार्ग बताया गया है। सरल भाषा में अपूर्व बोध हो सकता है। लगभग ११८ पृष्ठ के दोनों भागों का मूल्य चार आना। एक भाग की कीमत दो आना।

(५) बालगीत—यह बालकों के लिए सादी भाषा में आनन्द व शिक्षाप्रद गीतों की उत्तम पुस्तक है। सोलह पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल आध आना।

(६) भावानुपूर्वी—इसमें विस्तृत उत्तम प्रस्तावना है जिस में आचार्यवरों का आशय प्रमाद छोड़ने के हेतु इसकी शुरूआत करने का बताया गया है। बन सके वहाँ तक ज्ञान ध्यान में ही चित्त लगाना श्रेयस्कर है। यदि यह न बने तो पंचपरमेष्ठि के गुणों को प्रकट करने रूप क्रोधादि चार कषाय व अज्ञान नाश की भावना पांच अङ्कों में व्यवस्थित की है। इसलिये इसका नाम अनुपूर्वी रक्खा गया है। यह बिलकुल नवीनता है। अन्त में शांति प्रकाश के रागद्वेष निवारण व आत्मानुभव के दोहे भी दिये गये हैं। बत्तीस पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य एक आना।

निम्न लिखित पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने वाली हैं—

(१) बालपोथी, (२) जैन तत्व प्रश्नोत्तर, (३) नैतिक जीवन, (४) आरोग्य शिक्षा, (५) जैनों में नवजीवन।

उपरोक्त सब पुस्तकों में बढ़िया कागज सुन्दर छपाई और बढ़िया कवर लिये गये हैं, उपरोक्त सब पुस्तकों की साइज क्राउन सोलह पेजी है।

हमेशा के लिये इस कार्यालय की हर कोई पुस्तक कोई भी व्यक्ति प्रकाशित कर सकता है कारण ज्ञान जीव का गुण है। उसे प्रकट करने के साधन सबके लिये समान हैं। सब जीवों को सत्यज्ञान का प्रकाश होकर वे सच्चरित्र द्वारा परम सुख को प्राप्त करें यही भावना है।

व्यवस्थापक
आत्म जागृति कार्यालय, बगड़ी (मारवाड़)

नम्र निवेदन

एकबार ये पुस्तकें मँगवा कर पढ़ें, विचारें, मनन करें और अंतरात्मा को पूछें कि ऐसा ज्ञान स्वयं प्राप्त करना व औरों को प्राप्त कराना कितना जरूरी है। यदि हितकर मालूम पड़े तो खूब प्रचार करें।

आवश्यक पुस्तकें मँगवा कर या प्रकाशित करा कर पुस्तकालय, पाठशाला, कन्याशाला, बोर्डिंग, विद्यालय, सभा, सम्मेलन, लग्न, कदियावर आदि हर स्थान और अवसर में खुले हृदय से प्रभावना करें।

आचार्य, गुरु बड़े माता पिता, स्नेही के स्मरण में फिजूल खर्ची के स्थान में उत्तम पुस्तकें बाँटकर स्वर्गीय पवित्र आत्माओं का सुयश सर्वत्र फैला कर विशेष पुण्य उपार्जन का उत्तम आदर्श उपस्थित करें।

यह कार्य आत्मा के निज का है, कारण "ज्ञान" आत्मा का गुण है "आत्मा ही ज्ञान है" और "ज्ञान ही आत्मा है"।

"दुःखों का मूल अज्ञान है" और "सुखों का मूल ज्ञान है"।

यह कार्य अन्धकार नाश करके सत्य ज्ञान प्रकट करने का साधन है। जहाँ साधन उत्तम है वहाँ शीघ्र सिद्धि होती है।

मन्त्री

सस्ता-साहित्य प्रेस अजमेर।

भाव अनुपूर्वि

का

स्वरूप



जो आत्मा ने राग, द्वेष, मोहादि भाव शत्रुओं को जीतने का उद्यम कर उन्हें जैन कहते हैं। इसीलिये जैन धर्म को स्थापने वाले महापुरुषों को अरिहन्त देव कहते हैं। 'अरि' का अर्थ है शत्रु। 'हन्त' का अर्थ है नाश करने वाले। सच्चे शत्रु क्रोधादि ही हैं और जो इन सर्व दोषों का सर्वथा क्षय करे वे 'अरिहन्त' होते हैं।

आज जैन धर्म एक जातीय धर्म या पक्ष विशेष हो गया है, परन्तु वास्तव में धर्म मात्र का जैनत्व—आतर शत्रुओं पर विजय—करना पड़ेगा और बिना आतर दोष के क्षय किये कभी सच्ची शांति, सत्य सुख नहीं मिलेगा, इसमें जैन धर्म के नाम को भले ही सब न स्वीकार परन्तु इसके गुण का तो सब चाहते हैं।

शास्त्र में अनुपूर्वि पढने के, माला फेरने के नियम कोई न न लिये या अनुपूर्वि पचपद की इस शैली को किसी स्थान में दृष्टिगोचर नहीं होती है, तब आज इसका बहुत प्रचार कैसे है, इसकी शोध करते यह मालूम होता है कि पूर्वाचार्यों ने समाज की हालत देखकर इसका उपदेश दिया (प्ररूपणा की) है। जरूर उपदेशदाता तो परम उपकारी हैं परन्तु हम अनुयायी लोग ज्ञान की कमी से

लेन से दुखों का छुटकारा होता है या गुण ग्रहण करने से ? जो नाम से ही सिद्धि होवे तो अनन्त बार नाम लिया, यह शास्त्र सिद्ध है फिर क्यों मुक्ति न हुई ? उत्तर एक ही मिलेगा कि गुण ग्रहण न किये । प्रत्यक्ष अनुभवसिद्ध बात है कि भोजन के नाम से तृप्ति नहीं होती परन्तु भोजन करने से ही तृप्ति होती है । शास्त्रकार कहते हैं कि नाम से पुण्य प्रकृति बंधती है । अर्थ विचार से अलंकम क्षय होता है और अनुभव अर्थात गुण ग्रहण करने से मोक्ष होती है अर्थात वैसे बन जाते हैं ।

अपन सब सुख, श्रेय और उन्नति को चाहते हैं तो अवश्य परीक्षापूर्वक उन्नति का मार्ग लेना चाहिये । पाँच पद अज्ञान और कषाय के त्याग से मिलते हैं । बहुत अंश (तीन चौक) की कषाय व अज्ञान घटे तब क्रमशः साधु, उपाध्याय और आचार्य पद मिलते हैं । जब सब कषाय क्षय होवे तब ज्ञानावरण नाश होकर पूर्णज्ञान (केवल ज्ञान) प्रगट होता है और अरिहंत बनते हैं । फिर आयु पूर्ण होते ही शरीर छूटने से सिद्ध होते हैं । इस प्रकार पाँचों पद एक ही जीव लेकर मोक्ष में जाता है (स्थूल पदवी तो नाम कर्म के उदय से आचार्यादि की मिलती है । यह जीव का स्वभाव नहीं है परन्तु पंचपद के गुण हैं, सो जीव का स्वभाव है) अब पाँचों पदों के गुण प्रकट करने के हेतु एक उत्तम महात्मा ने यह भाव अनुपूर्वि का दान भाग्योदय से दिया है । आशा है कि यह लाभ-दायी होगा । इससे यह न मान लेवें कि माला व अनुपूर्वि गिनना बुरा है । जो प्रमादी हैं वे विष का पान करते हैं और अनुपूर्वि माला गिननेवाले दूध मिश्री का पान करते हैं । साथ में उसी समय क्रोधादि क्षय की भावना हो तो अमृतरस के पान तुल्य फायदा

टीकाकार ऐसी मान्यता से यह प्रयत्न किया है। श्री आचारांग सूत्र में स्पष्ट वचन हैं कि 'प्रथम स्पर्शात नष्ट करे' यह कषाय शांत की भावना से होता है। पुनः कहा है कि क्रोध से मान होवे, मान से कपट होवे, कपट से लोभ होवे, लोभ से रागद्वेष होवे, रागद्वेष से जन्म, जरा, मरण, नरक, तिर्यंच आदि के अनन्त दुःख होवे और उसके आगे दूसरे ही वचन में फरमाया है कि क्रोध जीतने से कपट जीते, कपट जीतने से लोभ जीते, लोभ जीतने से रागद्वेष जीते, रागद्वेष जीतने से जन्म, जरा, मरण, नरक, तिर्यंच आदि अनन्त दुःखों से छूटे। क्रोध करते समय अपनी बड़ाई हो जाती है, इससे मान होवे ऐसा कहा गया है। मान युक्त बड़ा होता है, इससे फिर स्वदोष छिपाने के कारण कपट करना पड़ता है। कपट करने वाला इष्ट का लाभ करता है। लाभी का ही इष्ट में राग, अनिष्ट में द्वेष होता है और संसार का बीज ही रागद्वेष है "रागो य दोसो वि य कम्म बीयं" कर्मबंध के कारण ही दो हैं। "नोहिं वधगाण रागेण दोसेण" धर्म के चार द्वार शास्त्र में बताये गए हैं—(१) क्षमा (२) विनय (३) सरलता और (४) संतोष। क्रोधादि क्षय और क्षमादि प्रगट करने की भावना दिखाई है। राग के दो भेद माया और लोभ हैं। द्वेष के दो भेद क्रोध और मान हैं। अज्ञान से जीव क्रोधादि कषाय करता है, इसलिये अज्ञान क्षय की भावना भी अच्छी है। एक मनुष्य सेठ या राजा को भजता है वह कुछ इनाम पाता है। दूसरा सेठ या राजा के गुण धारण करता है वह उस रूपका तुरन्त होता है। यह क्रोधादि दूर की भावना पचपन रूप होने का काम है।

आप अनुपूर्वि पढ़ें तो कृपया इस प्रकार पढ़ने का यत्न करें।

यह पाच पद के गुण प्रगट करने की ही भावना है । इससे बहुत कर्मक्षय व आत्मशांति का अनुभव होगा । क्रोध, मान, कपट, लोभ और अज्ञान घटने मे इसलोक और परलोक में अतुल आनंद प्राप्त होगा । इसको अवश्य अभ्यास मे लेवें । नवीन ज्ञान सीखनेवालो को तत्वज्ञान और शास्त्ररहस्य ही सीखना और यहाँ शिक्षा आवे सो लेकर कषाय घटाने में उपकारक बनाना । जो लोग ज्ञान पढने मे उद्योग नहीं करते हैं वे उत्तम भावना का अवलंबन समझ कर इसका पठन करें, यही विनती है । यह अंतरंग दोषों के नाश की भावना है और भावना ही जीवन को पलटाने का श्रेष्ठ साधन है । जैसी भावना होती है वैसी ही सिद्धि अर्थात् प्राप्ति होती है । इसका नाम भाव अनुपूर्वि है, कारण भावों की शुद्धि करने का साधन है, अर अकषाय को ही शुद्ध ध्यान कहा है । इसको माला की शैली से भी गिन सकते हैं । ऐसी माला गिनने से ये दोष घटकर महान् लाभ होता है ।

भाव अनुपूर्वि गिनने की समझ इस प्रकार है—

(१) यहाँ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो ।

(२) यहाँ मान नाश हो विनय प्रगट हो ।

(३) यहाँ माया [कपट] नाश हो सरलता प्रगट हो ।

(४) यहाँ लोभ नाश हो संतोष प्रकट हो ।

(५) यहाँ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो ।

इसी प्रकार हरेक पाच विषयों की अनुपूर्वि इसमें गिन सकते हैं । जैसे पाच आचार की अनुपूर्वि—

(१) अज्ञान नाश हो सत्यज्ञान प्रकट हो ।

(२) मिथ्यात्व नाश हो समकित प्रकट हो ।

(३) विषय कषाय नाश हो प्रथम प्रकट हो।

(४) प्रमाद नाश हो शुद्ध तप प्राप्त हो।

( ) कुपुरुषार्थ नाश हो पंडितवीर्य प्रकट हो।

पांच नवकार का अनुपूर्वि—

(१) श्री अरिहन्तदेव का नमस्कार करता हूँ मैं भी रागद्वेष मोह को नाश करने से अरिहंत होऊँगा।

(२) सिद्ध भगवान को नमस्कार हो मैं भी सकल कर्म नाश करने से सिद्ध होऊँगा।

(३) श्री आचार्य महाराज का नमस्कार हो मैं भी ज्ञानादि पांच आचार प्रकट करूंगा।

(४) श्री उपाध्यायजी महाराज का नमस्कार हो। मैं भी ज्ञान सेवक उपाध्याय बनूँगा।

(५) सकल मुनिगण को नमस्कार करता हूँ। मैं भी हिंसा विषय कषाय छोड़कर मुनि बनूँगा वह दिन धन्य होगा। इस प्रकार अन्य भी इच्छानुसार गिन सकते हैं।

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रटम हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो

२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो

२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रकट हो	२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो

२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	[illegible] कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो

३ कपट नाश हो सरलता प्रगट [redacted]	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट [redacted]	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ अज्ञान नाश [redacted] प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो

२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
२ मान नाश [redacted] विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
४ लोभ [redacted] हो सतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो

२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो

२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सन्तोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो

३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो संतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो

सदुपदेश

प्रेम सहित वन्दौं प्रथम, जिनपद कमल अनूप,
ताके सुमरत अधम नर, होवत शान्तस्वरूप । १ ।
तुव शरणे आयो प्रभू राखि लेउ निज टेक ।
निर्विकल्प मम सिद्धजी, देवो विमल विवेक । २ ।

राग निवारण अंग

अरे जीव भव वन विषै, तेरा कौन सहाय ।
जिनके कारण पचि रह्या, तैंतो तेरे नाय ॥ १ ॥
संसारी को देखिले सुखी न एक लगार ।
अब तो पीछा छोड़िये, मत धर सिर पे भार ॥ २ ॥
झूठे जग के कारणे, तू मत कर्म बँधाय ।
तू तो रीता ही रहै, अन पैला ही खाय ॥ ३ ॥
तन, धन संपति पाय के मगन न हो मन माय ।
कैसे सुखिया हो गया, सोने लाय लगाय ॥ ४ ॥
ठाठ देख भूले मति ए पुद्गल परमाय ।
देखत देखत थाहरै जासी थिर न रहाय ॥ ५ ॥
लूटेगा ज्ञानादि धन, ठग सम यह संसार ।
मीठे वचन उचारि के, मो फाँसी गल डार ॥ ६ ॥
किधौं भूत तोकों लग्यो, करे न तनक विचार ।
ना माने ता पर खिजे, मतलब को संसार ॥ ७ ॥
काया ऊपर थाहरे, सब सू अधकी प्रीत ।
या तो पहले सबन मे, देगी दगो नचीत ॥ ८ ॥

विषय दुखन को सुख गिनै कहूँ कहाँ लगि भूल ।
आँख छता अंधा हुआ आलपणा में धूल ॥ ९ ॥
निन प्रति दीसत ही रहे उगे अस्त गति भान ।
अजहुँ न ज्ञान भयो कछू तू तो बडो अज्ञान ॥१०॥
किसके कहे निचिंत तू सिर पर फिर जुकाल ।
बाधे है तो बाध ले पानी पहिले पाल ॥११॥
आया सो सब ही गया अवतारादि विशेष ।
तू भी या ही जायगा इण में मीन न मेष ॥१२॥
या अवसर फिर ना मिलै अपनो मतलब सार ।
चुकते दाम चुकाय दे अब मत राख उधार ॥१३॥
कैसे गाफिल हो रहा निवडा आ तकरार ।
निपजा खेती मेय क्या खाटी सटे गँवार ॥१४॥
धर्म निहार कियो नहीं कीनो विषय निहार ।
गठ खाय रीत चले आर जग हटवार ॥१ ॥
काम करत पर घरन के अपना काज बिगार ।
सीत निवार जगत का अपनी झुपरी बार ॥१६॥
नहिं विचार तैं ने किया करना था क्या काज ।
उदै हो गया कर्म फल तब उपजेगी लाज ॥१७॥
झूठे समागम की छूटेगी जब लाज ।
इनसों अलगा होयगा तब सुधरेगा काज ॥१८॥
अपना पूंजी मूं करौ निश्चय कार निहार ।
धाम्या सो ही भोग ले मति कर और उधार ॥१९॥
नया कम अरण काढि के करसी कार निहार ।
देणा पडसी पार का किम होसी छुटकार ॥२०॥

विषय भोग किंपाक सम, लखि दुख फल परिणाम ।
जब विरक्त तू होयगा, तब सुधरेगा काम ॥२१॥
अर मन मेरे पथिक[1], तू न जाव वहँ ठौर ।
बटमारा पाँचू[2] जहाँ करैं साहु कू चोर ॥२२॥
आरम्भ विषय कषाय कू, कीनो बहुत हि बार ।
कछु कारज सरिया नहीं, उलटा हुआ खुवार ॥२३॥
चारूँ सञ्ज्ञा मे मग्न, सुनै निपुन चित लाग ।
गुरु समझावे कठिन सूँ, उपजै तउ न वैराग ॥२४॥
खैर हुआ जो कुछ हुआ, अब करनो नहिं जोग ।
बिना बिचारे तैं किया, ताको ही फल भोग ॥२ ॥

द्वेषनिवारण अंग

बुरा कहै कोउ तो भली, तो तू भला जु मान ।
बूरा मीठा होय है, सब बनि है पकवान ॥ १ ॥
कटु ताड़ण अति विष भरी, गाली शस्त्र समान ।
अशुभ कर्म गुम्मट भिदो, यो जिय सुलटी जान ॥ २ ॥
कटुक बचन की कहन्यिा, लगज्यु दिल म तार ।
समदृष्टि चू समझले, जो जान्या अतिचार[3] ॥ ३ ॥
वैरी होता तो कबहु नहिं कहता कुछ बात ।
सज्जन जैसे माहिरा, रुज लखि कटुक[7] खवास ॥ ४ ॥
औगुन सुनिके आपणा, रेमन सुलटी धार ।
मो, गरीब कू जानि के लीना बोझ उतार ॥ ५ ॥

---

१ मुसाफिर २ शब्द रस, रूप, गंध, स्पर्श पाँच इन्द्रियों के भोग
[illegible] आत्मिक सुख को लूटने वाले भाव । ३ आहार । ४ भूल अशुभ
कर्तव्य । ५ बलवान् ६ राग । ७ कड़वा औषधि ।

मैं भूल्यो शुभ राह कूँ इसने दई बताय ।
दुर्जन जानि परे नहीं सज्जन हो दरसाय ॥ ६ ॥
अस्त ज्ञान सूरज हुआ, मैं भूल्यो निज राह ।
निंदा रूप मसाल ले इणे दिखाई राह ॥ ७ ॥
सुनि निन्दक के वचन कु चित मति करै उचाट ।
यह दुर्गंधित पवन अति बहतां कू मत डाल ॥ ८ ॥
कुवचन हार क्या कर सरै तू होजा पाषान ।
तेरो कछु गिरे नहा बाको ही अपमान ॥ ९ ॥
कुवचन गोली के लगे जो ले मनकू मार ।
आपहि ठण्डी होयगी होगा शीतल गार ॥१०॥
तैंने उपर सूं कहा, मैंने समझी ठेठ ।
मय हो लम्बा मिट गया एक रह गया पेट ॥११॥
रे चेतन तुलना समझ तेरा सुधरया काज ।
कुवचन घरवर बाहरी इणने सौंपी आज ॥१२॥
होगी सोहि नीसरै वस्तु भरी जिहि माहिं ।
या का गाहक मति बने तेरे लायक नाहिं ॥१३॥
अपना अवगुण सुण करी, मति जाने जिय रीस ।
मन में तू यू समझले मूनें १ आसीस ॥१४॥
क्रोध अगनि दिल मति लगा सुन अजथारथ बोल ।
छमा रूप जल छिडकिये नेक न लागै मोल ॥१५॥
दुर्जन चुप है है नहीं, तू तो छिन चुप साध ।
तन बिन परि है अगनि कु आपहि होस समाधि ॥१६॥
तू तृण सम कटु वचन सुनि क्रोध अगनि मति माझि ।
पत्थर[2] नीर मम करहु मन, तब मिलि हैं शिवराज ॥१७॥

---

१ पूर्वकथित २ पत्थर–

आई गई करि गालि कू, क्रोध चडाल समान ।
नतर पिछान चडालनी, पले पकड़ें आन ॥१८॥
पुर सहाय नहीं होहिंगे, रे जिय सच्ची जान ।
क्रोध परीयू होयगो, साधू रजक समान ॥२०॥
आत्म[1]वस्त्र मैला लखि, इणनें [2]धोना धोय ।
कटुकवचन साबुन करी, निरमल जानि के मोय ॥२१॥
जौंहरि होके मति करै, कुजडी के सग रार ।
रतन विलखसी थाहरा, भाजो सटे गँवार ॥२१॥
साला की गाली दई, ए विचार चित ठारि ।
भगनी सम इणकी त्रिया, इम समझो व्रत धारि ॥२२॥
किरतघनी बननौ नहीं, दई गार इण मोए ।
अस आतम सीतल करौं, मम उधार तब होय ॥२३॥
गारी एकहि होत है, बालत होत अनेक ।
रे जिय तू बोलै नहीं, तो वही एक ही एक ॥२४॥
अनत काल बोले प्रभू, देख रखे यह भाय ।
परि है कटु वच श्रवन में, ते किमि टाले जाय ॥२५॥

अनुभव विचार तथा ज्ञान अंग

पुकस विषयविकार मम, मति भनि मूढ गँवार ।
अनुभव रस तू चाखिलै गुरु मुख करि निरधार ॥१॥
पाठ किये तैं एक गुन, अनुभव किये हजार ।
ताते मनकू रोकिके क्यों नै करे विचार ॥ २ ॥

---

१ धोबी २"निंदा करने वाला मेरे पाप दोष रूपी मैल को धोता है।' य शब्द प्रगट में कहने से विरोधी का अपमान होता है और झगड़ा बढ़ता है इसलिए कोई उत्तम जीव की निष्कारण निंदा कर तो मन में समझने की यह बात है। ३ यह भी मन में रखना।

किए पाठ अनुभव विना, मिटे न भीतर पाप।
बाहर सीसी धोय के, करो चहे तू साफ ॥ ३ ॥
अल्प भार पाषान को, जिमि लागे जल माहिं।
तिमि अनुभव बिच कर्म को, बहु बधन है नाहिं ॥ ४ ॥
मन वच, तन थिर है हुवै, जो सुख अनुभव माहि।
इन्द्र नरेंद्र फनिंद के, ता समान सुख नाहि ॥ ५ ॥
अनुभव म प्रभु मिलत है, अनुभव सुख का मूल।
अनुभव चिंतामणि तजी मति भटकै वहुँ मूल ॥ ६ ॥
अति अगाध ससार नद विषय नीर गभीर।
अनुभव बिन पार न लहै कोटि करहु तदवीर ॥ ७ ॥
जिहि विचार तै पाय हैं मन हू थिर हुव ठौर।
ताकू अनुभव जानि लै अनुभव नहिं कछु और ॥ ८ ॥
बिना विचारे ज्ञान के, तू जगल का रोज।
मिथ्या यूँही पचत है क्या न करे अर खोज ॥ ९ ॥
मन मतग वश करन कू ज्ञानांकुश चित धार।
ममा छासौ बाधिकै लज्जा अरतल डार ॥१०॥
भ्रमतो मन रवि डाटलें, ज्ञान मुकर क ध्यान।
बिदु शुद्ध उपयोग मे कर्म तूल का हान ॥११॥
सीसा सम ससार है गुरु कृपा आदित्त।
ज्ञान ता बिन किम लखै आपन पौ सुपवित्त ॥१२॥
विषय वासना वरत जो आवे ज्ञान अगीस।
नासठ काम्न समय में छिन म होय छवीस ॥१३॥
जो तू चाहै ज्ञान सुख तो विषयन मन फर।

१ काच २ मूख ३ ज्ञान स विषय की अरुचि होना है।

और जगह भटके मती, आपन ही में हेर ॥१४॥
ज्ञान रूप दीपक बने, बचे न कर्म पतंग ।
जो रहता दोनूं में, मूठों एक प्रसंग ॥१५॥
ज्ञान प्रचरे जिहि समय, रहे न कर्म समाज ।
और न पशि हटि भजै, जहां चमरा बाज ॥१६॥
घर नहीं छूट्यो एक सौं, छूट्या कर्म दुइग ।
ज्ञान तणा मतमग थी, ऐयो ठाणा यग ॥१७॥
क्षण इक ज्ञान विचार ले, विषय दृष्टि को फेर ।
मरी मरी त्याग दे, यों होवे सुरभेर ॥१८॥
आठ पहर दिन' रातिलि, ज्ञान स्वरूपा ढाल ।
मोह अरि के विषय शर, लगे न ताकी भाग ॥१९॥
माया मोह निवार के, विषयन सों मन खींच ।
जो सुख चाहे आपणा, रहे ज्ञान के बीच ॥२०॥
भेद लहे बिन ज्ञान के, मति भूसे ज्यूं स्वान ।
लोक गडरिया चाल तजि आपन को पहिचान ॥२१॥
जगत मोह फांसी प्रबल, करे न और उपाय ।
सत्संगत कर ज्ञान की, सहज मुकत हो जाय ॥२२॥
काम धेनु अरु कल्प तरु इण भवमें सुखकार ।
इण भव पर भव दुहन में, ज्ञान करे निस्तार ॥२३॥
चिंत पारस अरु ज्ञान के, अतर जानि महत्त ।
यह लोहा कंचन करे, वह गुण देय अनंत ॥२४॥
प्रथम ज्ञान पाछे दया, यह जिन-मत को सार ।
ज्ञान सहित किरिया करो, तब उतरो भव पार ॥२५॥

१-रात